ब-२४

साधना सुमनावली का षष्टम सुमन—

जय सियाराम जय जय सियाराम

॥ श्री सद्जनकनन्दिन्यै नमः ॥

श्री सीता तत्व प्रकाश

प्रकाशक व संग्रहकर्ता—

श्री प्रेमलता पदपद्म परागाश्रित

सियारामसरूप शरण 'सुहागलता'

बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रेस, बनारस।

फाल्गुन संवत् १९९९ वि०
हि० वि० वि० काशी

प्रथम संस्करण
२५० प्रति

जय सियाराम जय जय सियाराम

जय सियाराम जय जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम

॥ जय सियाराम ॥

बन्दना

वन्दे विदेह तनया पद पुंडरीकं
कैशोर सौरभ समाहृत योगि चित्तम् ।
हन्तुं त्रिताप मनिशं मुनि हंस सेव्यं
सन्मान सालि परिपीत पराग पुंजम् ॥ १ ॥

नीलाम्भोज दलाभि राम नयनां नीलाम्बरालङ्कृतां
गौराङ्गी शरदिन्दु सुन्दर मुखी सिस्मेर बिम्बा धराम् ।
कारुण्यामृतवर्षिणीं हरिहर ब्रह्मादिभिर्वन्दितां
ध्यायेत्सर्व जनेप्सितार्थं फलदां राम प्रियां जानकिम् ॥२॥

जय स्वामिनि सर्वेश्वरी, जय मिथिलेश कुमारि ।
नाम रटन दृढ दीजिये, निज किङ्करी निहारि ॥
तू मेरी सिय स्वामिनी, मैं चेरी हूँ तोर ।
यह सम्बन्ध विचारि उर, करहु सदा हित मोर ॥

'सी' उचरत सौभाग्य सुजस सुख सहज समाधि सवादी ।
सकल कलङ्क पङ्कदूरी कर होत अनन्य अवादी ॥
'ता' तारक तम, तोम तरल तन तृष्णा त्रिगुन तगादी ।
'श्री' युगलानन्य शरन श्री स्वामिनि नाम जपत सतसादी ॥

सीता रामहि प्राण प्रिय, सीता राम अधार ।
सीता बिनु तिष्टे नहीं, राम न नाम उदार ॥

॥ जय सियाराम ॥

॥ श्री सतगुरु आशीर्वाद ॥

चौ०-सुखी रहौ सियराम उचारी, दम्पति सुखमें होउ सुखारी।
बढ़ै सुहाग भाग अनुरागा, नित नेव मन रह तत्सुख पागा॥
रसना लेइ नाम रस स्वादा, परिहरि जग के वाद विवादा।
हृदय भावना अष्ट जाम की, उत्कँठा उर रहै धाम की॥
नयन लखें गुरु दम्पति झांकी,
हरन अखिल अघ चितवनि बाँकी।
श्रवन सुनें गुरु सिय पिय बचना,
जो सुनि मिटै झूँठ जग रचना॥
कर नित करें यथा विधि सेवा,
गुरु प्रभु की जो सब सुख देवा।
चरन चलें प्रभु गुरु दिसि ओरी,
विचरें मिथिला अवध कि खोरी॥
तन मन वचन भगति रस पागै,
रोम रोम अनुराग सु जागै।
दो०-सिया उर्मिला मांडवी, श्रुति कीरति हनुमान।
राम लषन रिपुहन भरत, करें तार कल्यान॥
होय परम कल्यान तब, उपजै उर प्रभु प्रेम।
बढ़ै नाम में नेह नव, रटन होय दृढ़ नेम॥
युगल विहार वहार वर, लखै आतमा तोर।
छूटै आवागमन यह, आशीर्वाद सु मोर॥
सिय सियबल्लभ लाल के, चरित चारु सुखधाम।
सतगुरु कृपा सु पाय चख, लखिहहिं आठोयाम॥

॥ श्री सीतारामाभ्यां नमः ॥

परमहंस श्री सियालाल शरण जी मधुकरिया का चरित्र

नव भक्त मालान्तरगत—श्री स्नेहलता जी रचित

छप्पै—खाँहिं मधुकरी माँगि अजब मस्तान सुचाला।
विचरि अवनि प्रभु भजहिं सबन ते ढंग निराला॥
कछु दिन मिथिला कछुक अवध कछु दिन रहि काशी।
नाम रटन बल कलि महँ सियबर भक्ति प्रकाशी॥
लहि रामवल्लभा शरण गुरु शरण भये तारण तरण।
सियलाल शरण जी संत वर नाम प्रचारक दुःख हरण॥ १॥
गल गुदरी अलफी सु अङ्ग शिर टोप विराजै।
झोरी कमण्डल खप्पर धरे फकीरी साजै॥
कंठी युगलर कंठ भाल लस तिलक रसाला।
विन्दु और चन्द्रिका सहित सोहत श्री लाला॥
श्री वैष्णव रसिक बिरागि वर नाम प्रेम छाके रहैं।
जय सियाराम जयजय सियाराम नाम अह निशि कहैं॥ २॥
रटत रटत श्री नाम गये होइ तत्व सु ज्ञाता।
अनुभव चख खुलि गयो भजन बल छायो गाता॥
यदपि सविधि नहिं पढ़े तदपि गुरु नाम कृपाते।
भये सु कबि किये काव्य सरस भक्ती रँग राते॥
"सतगुरु कृपा प्रकाश" तेहि नाम ग्रंथ सुन्दर परम।
लखि नेहलता मानी कविहिं होत अधिक ईर्षा शरम॥ ३॥
पै भावुक जन काहिं निरखि बाढ़त आनन्दा।
जिज्ञासुन को होत प्रेम पद सिय रघु चन्दा॥
प्रेमलता अस नाम काव्य महँ सुन्दर सौहै।
प्रगट नाम गुण कवित वानि अरु रूप सु जोहै॥
किमि करै प्रशंसा मन्द मति 'नेहलता' कलिमल ग्रसित।
जेहि सब विधि नाम भरोस तेहि गुण वर्णत ब्रह्मादि नित॥ ४॥

जय सियाराम जय जय सियाराम

श्री सद्गुरु भगवान जू

अखिल जीवोद्धारक, 'जय सियाराम जय जय सियाराम'
नाम ध्वनि प्रचारक श्री वैष्णव धर्मावलम्बी
बाल ब्रह्मचारी, परमहंस, परमाचार्य
श्री १००८ स्वामी सियालालशरण
जी महाराज, श्री प्रेमलता जू।

॥ जय सियाराम जय जय सियाराम ॥

॥ श्री मद्जनकनन्दिन्यै नमः ॥

॥ श्री सीता तत्व ॥

श्री सीता उपनिषद् में देवता लोग प्रजापति से पूछते हैं 'का सीता किं रूपमिति' सीता कौन है, उनका रूप कैसा है ? ब्रह्मा जी कहते हैः—'प्रणव प्रकृति रूपत्वात् सा सीता प्रकृतिरुच्यते' मूल प्रकृति रूपा होने से सीता को प्रकृति कहते हैं।

प्रणव, नाद, बिन्दु, कला, और कलातीत—इस सप्ताङ्क से जटित होने के कारण सीता ही प्रणव रूपिणी हैं। वही सत्व रजस्तमो गुणात्मिका प्रकृति हैं। वही त्रिवर्णात्मा साक्षात माया हैं। 'सी' में जो ईकार है वह प्रपञ्च बीज है, वही माया है। विष्णु संसार के बीज हैं, ईकार माया है। त्रिगुणात्मिका सीता साक्षात मायामयी हैं, वही अविद्या व विद्या स्वरूपिणी हैं। 'स' कार सत्य का नाम है, यही अमृत, प्राप्ति व सोम हैं। और 'त' कार है रजत सौन्दर्य मंडित विराजमान यशस्वी मणि विशेष।

शनकऋषि प्रणीत ग्रन्थमें श्री सीता रूप का वर्णन इस प्रकार है—माता का प्रथम रूप शब्द ब्रह्म प्रणव है, वही वेद पाठके समय प्रसन्न होकर उत्पन्न हुआ था। माता का द्वितीय रूप नारी रूप है-जो पृथ्वी से हल के अग्र भाग से उत्पन्न हुआ, तृतीय रूप है ईकार रूपिणी अव्यक्त स्वरूपा।

फिर श्री सीता जी का कैसा रूप है—श्री रामजी के साथ रहने से वह जगदानन्द कारिणी हैं, और जो कुछ देह विशिष्ट है सबकी

उत्पत्ति, स्थिति और संहारकारिणी भी वही सीता देवी हैं। सीता ही भगवती मूल प्रकृती हैं। तव सीता क्या नहीं हैं ?

श्रुति कहती है—

वे सर्व वेदमयी हैं, सर्व देवमयी हैं, सर्व कीर्तिमयी हैं, सर्व धर्ममयी हैं, सब का आधार और कार्य्य कारण दोनों हैं। वही महालक्ष्मी हैं। ब्रह्मा से लेकर स्थावर पर्य्यन्त सब की आत्मा वही हैं। देव, ऋषि, मनुष्य और गन्धर्व सब उन्हीं के रूप हैं। पञ्च-महाभूत, इन्द्रिय, मन और प्राण भी उन्हा के स्वरूप हैं। फिर दूसरी जगह श्रुतिने कहा है—

सीता शक्ति है, वह इच्छा शक्ति, क्रिया शक्ति और साक्षात शक्ति हैं। वही इच्छा शक्ति के तीन भेद भी हैं—श्री, भू, व लीला स्वरूप। वह भद्र रूपिणी हैं, प्रभाव रूपिणी हैं, और सोम सूर्य अग्नि स्वरूपिणी हैं। सोमात्मिका होने से सीता औषधियों के ऊपर प्रभाव विस्तार करने वाली हैं। वह कल्प वृक्ष, पुष्प, फल, लता और गुल्म स्वरूपा हैं। फिर औषधि से उत्पन्न औषध रूपमें वह अमृत स्वरूपा होकर, देवताओं को यज्ञ फल प्रदान करनेवाली हैं। वही सीता अमृत द्वारा देवताओं को, अन्न द्वारा पशुओं को और तृण द्वारा तृण भोजी जीवों को तृप्त करती हैं। वह सूर्यादिक सब लोकों का प्रकाश करती हैं। वही दिन रात्रि स्वरूणी हैं। निमेष से परार्द्ध पर्यन्त जो काल चक्र है वही जगच्चक्र है। इस प्रकार से सीता ही चक्रवत परिवर्त माना है। वह अग्नि रूप होकर समस्त जीवधारियों की क्षुधा और पिपासा के रूपमें स्थित हैं। औषधियों में शीत और उष्ण रूप से व्याप्त हैं। लोक रक्षा के लिये श्री देवी रूप धारण करती हैं। समस्त औषधि व प्राणिगण के पोषण के लिये सर्व रूपा हैं। वह ऋगयजुः सामरूप वेद मयी हैं। इक्कीस शाखाओं से ऋग्वेद, एक सौ नव शाखाओं से यजुर्वेद तथा सहस्र शाखा से सामवेद वही हैं। इसके अतिरिक्त पंच

शाखाओं में अथर्ववेद भी वही हैं। श्रुतिने कहने में कुछ भी शेष नहीं रक्खा।

अध्यात्म रामायण में श्री सीता जी के रहस्य वचनः—

'मां विद्धिमूलप्रकृतिं सर्गस्थित्यन्त कारिणीम्।
तस्य सन्निधिमात्रेण सृजामीदमतन्द्रिता॥'

शिव संहितायां भगवद्वाक्यम्—

प्राणादपि प्रिया सीता वेद गर्भोदितामम।
सुन्दरी सर्व गात्रेषु स्यामा सौभाग्य मञ्जरी॥ १॥
सर्व लक्षण सम्पन्ना सर्व दोष विवर्जिता।
अचिन्त्या मद्भुत रूपा श्री तेजः कान्ति महोज्वला॥ २॥
सर्व शक्ति मयी सीता सर्व शक्ति विधायनी।
सर्वागम कला पूर्णा गन्धर्वागम पारगा॥ ३॥
शृङ्गार स्वामिनि सर्व राग मार्ग प्रदर्शिनी।
रासोत्सव प्रिया नित्यं सर्व लोकैक सेविता॥ ४॥
भूः श्री लीलेश्वरी देवी लक्ष्मी लक्ष समर्चिता।
ब्रह्मान्ड कोटिभांडस्थ सर्व वस्तु महेश्वरी॥ ५॥

राम तामनीय उपनिषदे—

योवै श्री रामचन्द्रः सभगवान,
या जानकी भूर्भुवः स्वस्तस्यै वै नमोनमः।

रामचरितमानसे—

उद्भवस्थिति संहार कारणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्व श्रेयस्करीं सीतां नतोहं राम वल्लभाम्॥

वाम भाग शोभित अनुकूला, आदि शक्ति छबि निधि जग मूला।
जासु अंश उपजहिं गुणखानी, अगनित उमा रमा ब्रह्मानी॥
भृकुटि विलास जासु जग होई, राम वाम दिसि सीता सोई।
माया सब सिय माया माहू॥
आदि शक्ति जेहि जग उपजाया, सो अवतरिहि मोरि यह माया।

श्रुति सेतु पालक राम ! तुम जगदीश माया जानकी ।
जो सृजति जग पालति हरति रुखपाय कृपानिधान की ॥
नारद वचन सत्य सब करिहौं, परमशक्ति समेत अवतरिहौं ।
जासु कृपा कटाक्ष सुर, चाहत चितवन सोइ ।
राम पदारविन्द रत, ... ॥
अर्वाची सुभगे भव सीते ! वन्दा महेत्व ।
यथानः सुभगा सखि यथानः सुफला ससि ॥
(ऋ० ३ । ८ । ९)

अथर्ववेदे उत्तरार्द्धे—

जनकस्य राज्ञः सद्मनि सीतोत्पन्ना सर्व परानन्द मूर्तिर्गायन्ति मुनियोऽपि देवाश्च, कार्य कारणाभ्या मेव परा तथैव कार्य कारणार्थे शक्तिर्यस्याः, विधात्री श्री गौरीणाँ सैव कर्त्री, रामानन्द स्वरूपिणी सैव जनकस्य योगफल मिवभाति ।

महाराजा जनक जी के राज महल में श्री सीता जी प्रगट हुई हैं वह सर्व पर आनंद मूर्ति हैं। मुनिगण और देवगण उनका गान करते हैं। कार्य-कारणसे परे और कार्य-कारण शक्ति सम्पन्ना हैं। ब्रह्माणी लक्ष्मी, और गौरी आदि अनन्त शक्तियों की उत्पादिका हैं। श्री रामानन्द स्वरूपिणी हैं। वही श्री जनक जी के योगफल के समान परम शोभा देती हैं। श्री राम तापनीय उत्तरार्द्धे—

उद्भवस्थिति संहार कारिणीं सर्व देहिनाम् ।
सा सीता भगवती ज्ञेया मूल प्रकृति संज्ञिता ॥
निमेषोन्मेषसृष्टिस्थिति संहार तिरोधानानु ग्रहादि ।
सर्व शक्ति सामर्थ्यात्साक्षाच्छक्तिरितियीयते ॥
सकल कुशल दात्रीं भक्ति मुक्ति प्रदात्रिम् ।
त्रिभुवन जनयित्रीं दुष्टधी नाशयित्रिम् ॥
जनक धरणि पुत्रीं दर्पि दर्प प्रहर्त्रिम् ।
हरिहर विधि कर्त्रीं नौमि सद्भक्त भर्त्रिम् ॥

श्री शङ्कर वाक्य :—

सीतायाश्च परादेव्या लीला मात्र मिदं जगत् ।

सब श्रुतियाँ ब्रह्माजी से पूछती हैं :—

का स्याकं जननी देव, कः मितेति निबोधया ॥

ब्रह्माजी उत्तर देते हैं :—

तामेव जानकीं वित्त जननी मात्मनः पराम् ।
श्री रामं पितरं विज्ञ सत्यमेतद्वचो मम् ॥ इत्यादि २ ।

इस से सिद्ध हुआ कि श्री जानकी जी श्रुतिवन्दिता परात्परा शक्ति श्री रामब्रह्म को रमानेवाली हैं । सर्व वेदशास्त्र ग्रन्थ सन्त एक स्वर से श्री किशोरी जी के यश प्रभाव महिमा व गुणों का गान करते हैं । उनके विषय में जो कुछ वर्णन किया जाय सो सब कम है । माँ, बड़ी करुणामयी व दयालुनी हैं, निर्हेतुकी कृपा कर जीवों का उद्धार करती हैं । ऐसी स्वामिनी जू की महिमा को समझ उनकी स्तुति प्रार्थना ध्यान आरती पूजन निज कल्याणप्राप्ति अर्थ व मानवजीवन के परम उच्चतम लक्ष्यप्राप्ति प्रति नित्य प्रति करनीय है ।

॥ जय सियाराम जय जय सियाराम ॥
॥ जय सियाराम जय जय सियाराम ॥
॥ जय सियाराम जय जय सियाराम ॥
॥ जय सियाराम जय जय सियाराम ॥
॥ जय सियाराम जय जय सियाराम ॥
॥ जय सियाराम जय जय सियाराम ॥

॥ युगल छवि ध्यान ॥

मंजुछन्द—

जनक भवन मण्डप तर राजत श्री सियराम सलोने हैं।
श्याम गौर तनु अमल अनूपम हैं न कतहुँ अस होने हैं॥
केहि विधि कहौं कठिन मरकत मणि सम सुगन्ध बिनु सोने हैं।
नखशिख छबि शृङ्गार कहत श्रुति शेषहु साधी मोने हैं॥१॥
व्याह साज साजें शुभ अङ्गनि रङ्गनि की बलिहारी है।
जस दूलहा सुख सिन्धु सुहावन दुलहिन तस सिय प्यारी है॥
बारिय कोटिन काम राम पर सिय पर रति सु अपारी है।
प्रेमलता सिय लाल रूप छबि अकथ अलौकिक भारी है॥२॥
उत सिहरो अद्भुत सिर शोभित इत सु चंद्रिका मन मोहैं।
उत तुर्रा कलँगी मणि गुच्छे इत भूषण बहु विधि सोहैं॥
कारीं कलित कुटिल लट लटकहिं दोउ दोउ दिशि धनि जो जोहैं।
प्रेमलता लखि छटा छकी मति वरणि कहैं अस कवि को हैं॥३॥
इत केशर की खौरि कलित उत तिलक सुभाल लगाया है।
कनक तार कण झलकत तेहि पर लखि मन मोर लुभाया है॥
श्यामल बङ्क सुभौंह चहूँ जिमि बासव धनुष झुकाया है।
प्रेमलता रँग भरे नयन तिमि अमित मैन मद नाया है॥४॥
झुलनी नथ इत सुभग नाकमें उत नाशा मणि सुखदाई।
सहज लाल मुख पान चबाये दशन कांति नहिं कहि जाई॥
मन्द मन्द मुसकात कबहुँ जब हरत मुनिन मन बरियाई।
प्रेमलता सुख सदन बदन की अनुपम छबि जात न गाई॥५॥
कनक फूल ताटङ्क बन्दियाँ राजहिं इत श्रुति सिय के हैं।
मकराकृत कुण्डल मणि लटकन बाले उत अति नीके हैं॥
चिबुक चारु बिच श्याम बिन्दु इत पीत बिन्दु उत पीके हैं।
प्रेमलता जनमन मीननि हित जनु द्वै कुण्ड अमीके हैं॥६॥

इत कल कण्ठ जड़ाऊ हँसुली हार हमेल सुहाये हैं।
पंचलरी तिलरी दुलरी उर मणि मय रुचिर बनाये हैं॥
उत मणि माल जाल झलकात सु कण्ठा कण्ठ लगाये हैं।
प्रेमलता अनमोल सु भूषण लखि रति काम लजाये हैं॥७॥
बाजूबरा विजायठ सिय भुज शोभित अति जन सुख कारी।
बल निध बाँहिनि बीच जटित मणि अङ्गद बलय सु पियधारी॥
चुरियाँ चारु बँगलियाँ पहुँची पहिरे इत श्री सिय प्यारी।
प्रेमलता उत कड़े सु कंकण पड़े जड़े सुखमा भारी॥८॥
इत हथ फूल आरसी अनुपम छला मुँदरियाँ मन मोहैं।
उत अँगुरिनि अनमोल अँगूठी छला छाप बहु विधि सोहैं॥
कलित करतलनि रची सु मेहदी लखी लखत धनि जन जोहैं।
प्रेमलता सन्देह रहित चहुँ बाहैं सब सुखसन्दो हैं॥९॥
उत जामा जरकसी उपरना पीत पुनीत सु कमर कसी।
पीताम्बर काछे विधि आछे कोर मोर मन बीच बसी॥
इत सिय नवल अङ्ग नीलाम्बर चोली सरँग अनूप लसी।
प्रेमलता लघु ललित घाँघरो लाल ललकि मति जाय फसी॥१०॥
उत रसना इत क्षुद्र घंटिका मणि मय मुखर न जात भनी।
पगनि सुनूपुर ललित बीछियाँ अनवट पायल जटित मनी॥
सामवेद जनु विविध रूप धरि लागि चरण निज सहित अनी।
प्रेमलता गुण गाय रिझावत सियहिं सुकरि सेवा अपनी॥११॥
उत तोड़े कल कड़े जड़े मणि माणिक जगमग करते हैं।
अङ्गुरिन छले भले मन मोहत अवलोकत अघ हरते हैं॥
यावक युत चहुँ चरण अरुण तल एकउ पल न विसरते हैं।
प्रेमलता अनयास घोर भवसागर ते जन तरते हैं॥१२॥
उबटित नखशिख अङ्ग सुगन्धिनि कोमल कलित सु प्यारे हैं।
भूषण वसन सुयोग सहचरिनि अँग २ रुचिर सम्हारे हैं॥
बैठे मुदित बरासन मानहुँ छबि शृङ्गार शृँगारे हैं।

प्रेमलता उर वसत सदा दोउ होत न कबहूँ न्यारे हैं ॥१३॥
युगल माधुरी छके रसिक जन मन मतङ्ग वश कीना हैं।
श्री सियराम काम परिपूरण अर्पि तिन्हैं सब दीना हैं॥
इष्ट रजा में मुदित रहत जिमि गहरे जल में मीना हैं।
प्रेमलता मतिमन्द न यह रस जानहिं जे गुरु हीना हैं॥१४॥

श्री सीता शतनाम

छं०-श्री सीता सत नाम काम प्रद सतमत सार विचारी।
वदत बेद बानी नित नूतन अद्भुत स्वाद निहारी॥
श्री जानकी जानि जीवन श्री सीता नाम सदारी।
(श्री) युगलानन्य शरन स्वामिनि की कृपा प्रमोद अपारी॥१॥

रामा[१] रतिवर्द्धनी[२] रसेसा[३] राघव[४] प्रान पियारी।
रास रंग दरसनी[५] रमन[६] मन[७] रंजनि जनक[८] दुलारी॥
राग[९] रूप[१०] रस[११] जस[१२] सुख सदना[१३] शशि वदना[१४] सुकुमारी[१५]।
(श्री) युगलानन्य शरन रमनी[१६] रति मान[१७] विमोहन वारी[१८]॥२॥

कोक[१९] केलि पंडिता[२०] मंडिता[२१] कलावती कमनीया[२२]।
कमल[२३] प्रिया कोमला[२४] कोकनद[२५] सदृश सुदृग बरनीया॥
कामा[२६] कांतमती[२७] कमला[२८] कर पूजित पद रमनीया[२९]।
(श्री) युगलानन्य शरन संसृति दव[३०] दारुन दुख[३१] दमनीया॥३॥

भव्य[३२] भावदा[३३] भूरि[३४] भलाई[३५] बधू[३६] रसिक रघुराई।
भाल विभूषन[३७] विशद[३८] भूषिता निदूषिता[३९] सदाई॥
भोग[४०] भूति भूतल[४१] भवभामिनि पद[४२] वन्दिता सोहाई[४३]।
(श्री) युगलानन्य शरन भजनीया[४४] भजन भावना दाई[४५]॥४॥

चामीकर तन तेज[४९] निन्दिता चारु चातुरी[४७] रचना।
चमत्कारिणी[४८] चित्त[४९] हारिणी चांद चमक चय[५०] वचना॥
चंदन चाँद चाँदनी[५१] चपला चाहे चित विच[५२] सचना।
(श्री) युगलानन्य शरन चशमों दी ज्यौति[५३] जगमगति अचना॥५॥
सिया[५४] सलोनी[५५] सहज सुहावनि[५६] सारँग नयनी[५७] वामा।
शरनपालिनी[५८] शुभ गुन[५९] खानी कमला केलि ललामा[६०]॥
समीचीन[६१] सज्जन मन रंजनि[६२] सरल सुभाव[६३] सुधामा।
(श्री) युगलानन्य स्वामिनी सबको श्री सीता नव वामा[६४]॥६॥
मिथिला मोदकरी[६५] मिथिला पति नंदनि[६६] नवला[६७] नारी।
गिरिजा पूजन तत्पर[६८] पति पद प्रेम परा[६९] छविधारी॥
रघुनंदन कल क्रोड़[७०] विलासिनि सुख[७१] रासिनि उजियारी[७२]।
(श्री) युगलानन्य सुनैना रानी सुता[७३] सनेह सँवारी॥७॥
श्री दशस्यन्दन भूप[७४] पतोहू परम माधुरी[७५] सरिता।
सोम बंस[७६] जीवनी जानकी[७७] जग वंदिता[७८] सु चरिता॥
कौतुक सदन सोभिता तरुनी[७९] नित्या गुन गन भरिता।
(श्री) युगलानन्य शरन संपति[८०] सद दानी फलन[८१] सु फरिता॥८॥
दृगजा कूल कलोलनि[८२] रसिका[८३] कनक भवन[८४] भल भ्राजी।
नव नागरि[८५] गुन आगरि[८६] प्रीतम प्रान प्रिया[८७] सुख साजी॥
श्रुतिकीरति उर्मिला मांडवी मधुर हास[८८] लखि राजी।
(श्री) युगलानन्य शरन सुन्दर लावन्यलता[८९] रस राजी॥९॥
मंदस्मिता[९०] मनोज मानिनी मान प्रहार[९१] प्रवीना।
प्रेम मधुर आसन[९२] आसीना छविनिधि पय पिय मीना॥

माननीय मानस[१३] मरालिका कलित कञ्जकर[१४] बीना।
(श्री) युगलानन्य शरन सु कामदा[१५] कादंबिनी[१६] नबीना ॥१०॥
श्री प्रमोदन बन कुञ्ज[१७] विहारिनि रसिक विहारी संगिनि।
भूलन गीत परायन निज मुद[१८] सखिन प्रदायनि रंगीनि॥
लज्जावती रसीली ललना अद्भुत[११] नेह तरंगिनि।
(श्री) युगलानन्य शरन सीमा सौभाग्य[१००] सदैव उमंगिनि ॥११॥
श्री सीता सतनाम सुधा हृदय माझ मज्जत जोई।
ताको पाप ताप तम कोटिन कलप बिनाशन होई॥
और कौन फल अधिक कहौं सुनि सुख सरसो सब कोई।
(श्री) युगलानन्य रसिक रघुवर वस होत बात नहिं गोई ॥१२॥

इति श्री मधुर मंजु मलायां श्री मद्युगलानन्य शरण विरचितायां
श्री नाम परात्पर परत्व निरूपणं नाम द्वादशो नाम कान्ति
अन्तरगत श्री सीता शतनाम समाप्तम्।

॥ श्री जानकी अष्टक ॥

मंजु छन्द—ईश ईश नायक पूजित पद पंकज प्रणय परेरी।
सकल शिरोमणि शक्ति शान मद मान मलन छबि तेरी॥
शील स्वभाव सरस शोभित शत सुधा स्वाद मुख फेरी।
(श्री) युगल अनन्य शरण वल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी॥ १॥
श्री मिथिलेश विशेष विभव वर देश सनेह सुतेरी।
कौतूहल कल केलिकला करि दम्पति मोद दयेरी॥
परिकर निकर संग नाना रँग बाल उमंग कियेरी।
श्री युगल अनन्य शरण वल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी॥ २॥
सुषमा रूप निहारि नैन भरि सासु सात शत घेरी।
उरझी ललित लाड़ लालित सजि बारि प्राण धन ढेरी॥

सुन्दर सुवन सनेह सनी सिय जू पर प्रीति घनेरी।
(श्री) युगल अनन्य शरण वल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ३ ॥
कनक लता केतकी कंज कलिका हारी हिय हेरी।
काम कामिनी कला दमक दामिनि भामिनि चय चेरी ॥
रस रूपा प्रेमा प्रधान प्रिय प्रीति पुनीति नयेरी।
श्री युगल अनन्य शरण वल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ४ ॥
चितवन चारु चतुर चूड़ामणि चितवित हरत न देरी।
प्रीतम प्राण सुभग संपुट विच रतन विचित्र बसेरी ॥
पलक प्रेम पूरण प्रकाश कर कामद कोश लसेरी।
श्री युगल अनन्य शरण वल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ५ ॥
धवल धार सरजू सजनी सम सुजस सहस श्रुति टेरी।
नवल नाम अभिराम अमल अद्भुत अनूप गुन बेरी ॥
सम्बल सरस पुष्ट पावन पर धाम छींट छबि तेरी।
श्री युगल अनन्य शरण वल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ६ ॥
करुणा कृपा कटाक्ष भई तब काह करै छल छेरी।
अनायास परत्यक्ष पराबर नृपति प्रकाश सनेरी ॥
हृदय ग्रंथि भेदत छेदत छल छंद बासना जेरी।
श्री युगल अनन्य शरण वल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ७ ॥
अनु दिन उर अनुराग अलौकिक प्रीय चरण निबहेरी।
योग यज्ञ व्रत नेम ज्ञान गुन नेह नदीश बहेरी ॥
मुक्ति मुक्ति अभिलाष लाख करि रसिकन सुमति गहेरी।
श्री युगल अनन्य शरण वल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ८ ॥
अष्टक अमल सीय स्वामिनि नित चित दै जौन पढ़ैरी।
पावै अवशि सनेह प्रीय पद प्रीति प्रतीति बढ़ैरी ॥
दम्पति दाह दरिद्र दोष दिल दुरित दाग भट भेरी।
श्री युगल अनन्य शरण वल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ९ ॥

॥ श्री जानकी स्तुति ॥

(१)

छन्द-जै जानकी जग जननि स्वामिनि प्रणत जन सुखदायनी।
गुण रूप शोभा खानि सीता राम पिय मन भायनी ॥ १ ॥
जै जनक जाया जन निकाया शरण आये स्वामिनी।
अपराध छमि सिय पालु देवि कृपालु राम सुभामिनी ॥ २ ॥
कलि काल खल कामादि प्रेरि सुजननि मन व्याकुल किये।
छल कपट मद मानादि शर हति पाहि सिय बेधे हिये ॥ ३ ॥
हम जीव जड़ अज्ञान वश पद कमल भूले मातुरी।
तेहि लागि दारुण दुख सहे तब शरण अब तजि चातुरी ॥ ४ ॥
जै जयति आनँद कन्दनी यमलोक भव भय टारिनी।
जै जयति जै भुवनेश्वरी जै जयति स्ववश विहारिनी ॥ ५ ॥
ब्रह्मादि सुर सनकादि मुनि तव चरण पंकज ध्यावहीं।
श्रुति शेष सारद शिव सुनारद बिमल गुणगण गावहीं ॥ ६ ॥
जै पतित पावन भूमिजा श्रीराम रूप बिलासिनी।
जै चलनि बोलनि हँसनि मन्द सुमन्दमन परकाशिनी ॥ ७ ॥
सियराम नाम पियूष जेहि बिधि पियउँ सोइ कछु कीजिये।
मन बचन कर्म विकार हरि सियलाल शरण सुदीजिये ॥ ८ ॥

दो०-श्री सिय स्वामिनि नाम विनु, जे जन सुमिरहिं राम।
भुक्ति मुक्ति सो पावहीं, लहहिं न भेद ललाम ॥ १ ॥

(२)

छन्द-जै जानकी सुख कन्द करुणा भवन शोक प्रहारिनी।
सुर संत हित होइ प्रगट लीला करहु मंगल कारिनी ॥
जै राम प्रिय सिय भूमिजा संसार सागर तारिनी।
हँसि हेरि बारक चूक छमि मम कंज कर बरधारिनी ॥ १ ॥

गंधर्व किन्नर नाग मुनि तब चरण पंकज ध्यावहीं।
सेवहिं सदा सुर शक्ति सादर मुदित अति सुख पावहीं॥
श्रुति शेष शिव विधि बानि नारद विमल गुणगण गावहीं।
जो सुनत समुझत गुनत गतिप्रद सकल कलुष नशावहीं॥ २॥
तब प्रबल माया बश चराचर सभय नावत भालहीं।
विधि करहिं जगहरि भरहिं भयवश शंभु बिनु श्रम घालहीं॥
दिशिपाल काल कराल तव डर डरत आयसु पालहीं।
निजरूप गुण बलकियेउ बरबश स्ववश दशरथ लालहीं॥ ३॥
सिय नाम पूरण काम सुमिरत देत अभिमत फलसही।
जड़ यमन कोलकिरात खल जेहि सेइ अनुपम गतिलही॥
रटि भाग भाजन होत पामर नाम गुण सकु को कही।
यह जानि सिय पद कंज सादर प्रेमलतिका गहि रही॥ ४॥

दोहा–सुनि सिय महिमा नाम की, प्रमुदित मन मुशिकान।
प्रेमलतहिं हँसि हेरि तब, दीन अभय बरदान॥ १॥
जब लगि रटन न नाम, तब लगि सुख सपनेउँ नहीं।
मन न लहै विश्राम, प्रेमलता अवलम्ब विनु॥ १॥

(३)

दो०–जयति जयति सर्वेश्वरी, जन रक्षक सुख दानि।
जय समर्थ अहलादिनि, शक्ति शील गुन खानि॥

चौ०–जय सिय स्वामिनि जगदाधारा, जय मन बुद्धि ज्ञान गुन पारा।
जयति सकल ईशनि कर कारन, जय भ्रम सागर पार उतारन॥
जय आनन्दहुँ आनन्द दैनी, जय मित भासिनि सुचि मृदु बैनी।
जयति स्वतंत्र सकल घट वासिनि, जयति सुमुखि अवलोकहु दासिनि॥
जयति नाम तव सब सुख दाता, जन्म मरन नासन दुख त्राता।
जयति परम परमारथ रूपा, जयति चरित तव अकथ अनूपा॥
छमहु देवि अपराध हमारे, कीन्ह मोह वस जो अघ भारे।
अब करु कृपा स्वामिनी सोई, कबहूँ हमरे मोह न होई॥

जयति परम पावन सुख मूला, जयति हरन संश्रृति भ्रमसूला।
जय सरनागत वत्सल भामिनि, विश्वरूप चेतन बहु नामिनि॥
राम ब्रह्म की प्रान अधारा, जय जन पालक हरन विकारा।
जयति सुबुधि बल सुन्दर सागर, छमा दया करुना गुन आगर॥
जयति प्रीति पालक मृग लोचनि, हेतु रहित हित सोच विमोचनि।
जयति सखिन गन मध्य विहारिनि, जयति सु कीरति जग विस्तारिनि॥
जय मद मोह कोह भ्रम हरनी, असरन सरन दरन जन जरनी।

दो०—जयति शान्ति सुखमा सदन, धर्म सील सर्वज्ञ।
जयति भक्ति प्रद शक्ति पर, सरल सुभाव कृतज्ञ॥

(४)

जय सिय रघुराई जन सुख दाई कीर्ति सुहाई जग छाई।
गावहिँ श्रुति शेषा ब्रह्म सुरेसा समन कलेसा गति दाई॥
जय जय सुर भूपा अद्भुत रूपा छबि सु अनूपा अधि काई।
जय युगल सुजोरी विमल अखोरी स्यामल गोरी मन भाई॥१॥
जय जय पिय प्यारी प्रभु अवतारी महिमा भारी विस्तारी।
जय जय जग कारन भव भय टारन पावहिं पार न श्रुति चारी॥
जय बहु तनु धारी सँग सुकुमारी जनक दुलारी अति प्यारी।
सेवहिँ अलि वृन्दा पूरन चन्दा दोउ सुख कन्दा मुद कारी॥२॥
सुर नर मुनि भारी श्रृष्टि अपारी शक्ति तुम्हारी तिय रूपा।
तेहि सँग विहारा रूचि अनुसारा करहु उदारा सिय भूपा॥
यह भेद सु गूढ़ा लखहिं न मूढ़ा विषय अरूढा अघ कूपा।
प्रभु गति निरूपाधी हरन कु व्याधी वरनत साधी श्रुति चूपा॥३॥
जय परम सुजाना देउ सु ज्ञाना जीवनि दाना हरि माना।
जय करुना सागर सब गुन आगर नट नागर श्री भगवाना॥
जीवनि पर दाया कर रघुराया हरहु स्वमाया अग्याना।
निज रूप सु पावहिं येहि पुर आवहिं प्रभुहिं रिझावहिं विधि नाना॥४॥

दो०-तुम्ह समरथ सब भाँति प्रभु, हेतु रहित जन पाल।
देउ भगति भव तारिनी, जीवनि हरि जग जाल॥

पद

(१)

मेरे मन निवसहु स्वामिनि आय॥ टेक॥
जनक लली सिय सह रघुनन्दन, निसि वासर सुखदाय॥१॥
सहत दुसह दुख बहु दिन बीते, तुम बिनु परेउ भुलाय।
राम प्रिया करि कृपा जानि जन, लीजिय अब अपनाय॥२॥
त्राहि २ अब हे करुणाकर, अतिसय जिय घबराय।
पाहि २ जग जननि जानकी, कीजिये वेगि सहाय॥३॥
काल सुभाव कर्म गुन के वश, भरमेउ योनि निकाय।
जन्म समूह गये चलि यहि विधि, कहौं कहाँ लगि गाय॥४॥
कामादिक खल कपट दम्भ छल, निवसत उर बहुताय।
भजन पन्थ बहु त्रास दिखावत, अनरथ करत अघाय॥५॥
इन्द्री गन मन आदि मिले सब, देत सुधर्म नसाय।
प्रेमलतहिं लखि प्रबल नचावत, बहुविधि अवसर पाय॥६॥

(२)

पद—सिया जू सरल सु स्वामिनि मेरी॥ टेक॥
कृपा खानि सब गुणनि आगरी परम सुहित जनकेरी।
पूजित भयो लोक पर लोकहुँ, जाके दिशि टुक हेरी॥१॥
विवशहु जासु नाम जपि पामर, होत सुयश की ढेरी।
रीझत राम जपत सिय सिय मुख, श्रुति पुराण कह टेरी॥
शरण पाल सर्वज्ञ सर्व पर, रूप सुशील घनेरी।
जगतजननि शुठि जनकनन्दिनी, कीरति कलित कढ़ेरी॥३॥

राम प्रिया हँसि हेरि लाडिली, नाम रटन वर देरी।
प्रेमलता प्रिय जूठनि के हित, द्वार परी अलि तेरी ॥४॥

(३)

स्वामिनि सिया हमारी, फिकर मोहि काहे की ॥ टेक ॥
कौशल पति हैं ससुरा हमारे, स्वामी अवध विहारी–फिकर।
भरत लखन लघु देवर मोरे, सेवक हैं त्रिपुरारी–फिकर॥
ऋद्धि सिद्धि चरननि पर लोटत, हनुमत ऐसे पुजारी–फिकर।
'प्रेमलता' ये कलियुग कठिन है, स्वामिनि रखि हैं सम्हारी–फिकर॥

कवित्तः—सिय जू स्वरूप राम रूप को अधार जू ॥ टेक ॥
गावत पुराण वेद शकति अधार ब्रह्म,
शक्ति निराधार गति अकथ अपार जू।
शकति विहीन ब्रह्म चित्रके समान जानि,
निशि बिनु चन्द जिमि मन्द हीन सारजू॥
वायूके अधार जल जलके अधार कोल,
कोल पै कमठ शेष शेष भूमि भार जू।
भूमिके अधार श्रृष्टि गावत सुजान तिमि,
सीय जू स्वरूप राम रूपके अधार जू॥

दो०–परम शक्ति अहलादिनी, जनक नन्दिनी सीय।
प्रेमलता पिय उर बसति, पीय बसहिं सिय हीय॥

श्री प्रेमलता कृत विनय यह, सिय स्वामिन सुन लीन।
परसि सीश कर कँज निज, नाम रटन वर दीन॥
प्रात साँझ यह पाठ जन, जे करिहैं मन लाय।
सिय स्वामिनि तेहि रीझिहहिं, अवसि लेहिं अपनाय॥

जय सियाराम जय जय सियाराम।
जय सियाराम जय जय सियाराम॥

॥ जय सियाराम ॥

॥ श्री मद्जनकनन्दिन्यै नमः ॥

द्वितीय भाग

अथ श्री किशोरी जीका—

ध्यान—स्वर्णाभामम्बुजकरां रामालोकन तत्पराम् ।
ध्यायेत्षट् कोण मध्यस्थ रामाङ्कोपरि शोभिताम् ॥

स्तोत्र—रामां राजीवनयनां रामवक्षस्थलालयाम् ।
रामाङ्क पीठे राजन्तीं बन्दे श्री रामवल्लभाम् ॥ १ ॥
विदेह तनयां देवीं मन्दस्मितमुरवाम्बुजाम् ।
इन्दी वर विशालाक्षीं बन्दे श्री रामवल्लभाम् ॥ २ ॥
दिव्य माल्याम्बर धरां तप्तचामीकर प्रभाम् ।
चारुचन्द्राभवदनीं बन्दे श्री रामवल्लभाम् ॥ ३ ॥
पद्मासनां पद्म हस्तां, पद्म पत्र निभेक्षणाम् ।
पद्मालयां पद्मगन्धां, बन्दे श्री रामवल्लभाम् ॥ ४ ॥
हेमपद्मसमासीनां, नील कुञ्चित मूर्द्धजाम् ।
तरुणादित्य सङ्काशां, बन्दे श्री रामवल्लभाम् ॥ ५ ॥
विद्युत्पुञ्जप्रभाभासां सुरासुर नमस्कृताम् ।
त्रयी मयीं सूक्ष्म रूपां, बन्दे श्री रामवल्लभाम् ॥ ६ ॥
चन्द्र मन्डल मध्यस्थां, चन्द्र विम्बोपमाननाम् ।
चन्द्र कोटि प्रभा देवीं, बन्दे श्री रामवल्लभाम् ॥ ७ ॥
आदि मध्यान्त रहितामंभोरुह निवासिनीम् ।
नाद ब्रह्म मयीं देवीं, बन्दे श्री रामवल्लभाम् ॥ ८ ॥
यक्ष किन्नर गन्धर्व सिद्ध विद्याधरैः सदा ।
सेव्यमानं पदाम्भोजां बन्दे श्री रामवल्लभाम् ॥ ९ ॥

ब्रह्मेन्द्र बन्दितपदां सृष्टि स्थित्यन्त कारिणीम् ।
परमानन्दमयीं रम्यां वन्दे श्री रामवल्लभाम् ॥१०॥

गायत्री मन्त्र—ॐ जनकजायै विद्यहे, श्री रामवल्लभायै धी महि, तन्नः सीता प्रचोदयात् ।

चरम मन्त्र—ॐ कृपारूपिणी कल्याणि राम प्रिये श्री जानकी, कारूण्य पूर्ण नयने दया दृष्ट्यावलोकय ।

शरणागत मन्त्र—ॐ सर्व जीव शरणये श्री सीते वात्सल्य सागरे । मातर्मैथिलि सौलभ्ये रक्षमां शरणागतम् ॥

प्रार्थना—संसार सागरान्नाथ पुत्र मित्र गृहाकुलात् ।
गोप्तारौ मे दयासिन्धू प्रपन्नभयभञ्जनौ ॥ १ ॥
योऽहंममास्ति यत्किंचिदिहलोके परत्र च ।
तत्सर्वं भवतोरेव चरणेषु सर्मपितम् ॥ २ ॥
अहमस्म्य पराधानामालयस्त्यक्त साधनः ।
अगतिश्चततो नाथौ भवन्तावेव मे गती ॥ ३ ॥
ॐ तवास्मी जानकीकान्त कर्मणा मनसा गिरा ।
रामकान्ते तवैवास्मि युवामेव गतिर्मम ॥ ४ ॥
शरणं वां प्रपन्नोऽस्मि करूणा निकराकरौ ।
प्रसादं कुरुतां दासे मयि दुष्टेऽपराधनि ॥ ५ ॥
मत्समोनास्ति पापात्मा त्वत्समो नास्ति पापहा ।
इति सञ्चिन्त्यदेवेश यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ६ ॥
अन्यथाहि गतिर्नास्ति भवन्तौ हि गतिर्मम ।
एतत्कारुण्य भावेन कृपां कुरु दयानिधे ॥ ७ ॥
दासोऽहं शेषभूतोऽहं तवैव शरणागतः ।
अपराधित दीनोऽहं पाहि मां करुणा कर ॥ ८ ॥

भारद्वाजांशभागेन ययाचे परमेश्वरोम्,
देवि सीते महाभागे दर्शितं रूपमैश्वरम् ।
हृदयान्नपगच्छेत्तदिति मे दीयतां वरः,
भ्रातरो मम कल्याणि वानराः सविभीषणाः ॥२१॥
सेनान्यो मम वैदेहि अयोध्यायोधमुख्यकाः,
पुनस्ते सङ्गताः सन्तु मया रावणतर्जिताः ।
एतस्मिन्नन्तरे चाभूदाकाशे दुन्दुभिस्वनः,
पपात पुष्पवृष्टिश्च रामसीतोपरि द्विज ॥२३॥
प्रहस्यसीतापुनराहरामं तथेतिरामोऽपि विरिञ्चिमुख्यान् ।
स तान्विसृज्यप्रतिगृह्यसीतां गन्तुं स्वकं देशमसावियेष ॥२४॥

इत्यार्षे श्री मद्रामायणे बालमीकीये आदिकाव्ये
अद्भुतोत्तरकांडे ऐश्वर्य वर्णन समाप्तम् ।

श्री सीता स्तुतिः आनन्द रामायणे

जनकात्मजे श्री राघव प्रिये कनक भासुरे भक्त पालिके-
दशरथात्मज प्राण बल्लभे तव पदाम्बुजाऽलिः शिरोऽस्तुमे ॥१॥
मूलकासुर प्राण घातके राम रक्षिते राम सेविते ।
राम मोहिनि स्यन्दनस्थिते त्वत्पदाम्बुजाऽलिः शिरोऽस्तुमे ॥२॥
राम मञ्चकाधिष्टिते रमे राम वीजिते राम लालिते ।
राम संस्तुते राम रंजिते त्वत्पदाम्बुजाऽलिः शिरोऽस्तुमे ॥३॥
लोक पावनि श्री रजे वरे भूमि कन्यके लोक पालिके ।
पद्मलोचने श्री धरात्मजे परे त्वत्पदाम्बुजाऽलिः शिरोऽस्तुमे ॥४॥
कंज लोचने नाग गामिनि स्वीय सत्सुखे रम्य रूपिणि ।
रुक्मभूषिते मौक्तिकान्तिके त्वत्पदाम्बुजाऽलिः शिरोऽस्तुमे ॥५॥
जल रुहानने चित्र वासिनि त्ववसि सर्वदा स्वीय सेवकान् ।
मुनिरिपुन्सदा दुःख दायक त्वत्पदाम्बुजाऽलिः शिरोऽस्तुमे ॥६॥

त्वन्मुखेक्षणाद्रक्षसां पतिः प्राण संक्षयं राम सत्प्रिये।
त्व दृगेक्षणाल्लज्जिता मृगी त्वत्पदाम्बुजाऽलिः शिराऽस्तुमे ॥७॥
कुश लवाम्बिके जल रुहानने जल रुहेक्षणे पाप दाहके।
मधुर सुस्वने नूपुरस्वने त्वत्पदाम्बुजाऽलिः शिरोऽस्तुमे ॥८॥
घ्राण मुत्तमं ते स्मितानने तेऽधरः शुभाविम्ब सन्निभः।
अद्य वै त्वया मूलकासुरो मारितो रणे तारिता वयम् ॥९॥
ब्रह्मणेरितं नवकमुत्तमं भास्करोदये पठति यः पुमान्।
सर्वं वांछितं लभति सोऽत्रना प्राप्नुयात्सुखं राम सन्निधिम् ॥१०॥

॥ श्री सीतारामनामाभ्यां नमः ॥

॥ सर्वव्याधिनाशक श्री जानकी स्तुति ॥

ध्यानम्—सुरमणि सुन्दर रतन सिंहासन चिन्मय भ्राजत। नखत चन्द्र रबि कोटि दामिनी दुति जहँ लाजत ॥ कनक भवन श्री अवध अवधि छबि वरणि न जाई। श्री विदेह नृप कुवँरि निरखि श्री अमिति लजाई ॥ रामायण श्री स्वामिनी युग पद पङ्कज ध्यान धर। श्री राम प्रिया करुणा भवन करत बिनय दोउ जोरि कर ॥१॥ सखिसमूह चहुँ ओर मध्य श्री जनक दुलारी। कोउ ब्यंजन कोउ चमर कोऊ कर कञ्चन थारी ॥ कोउ बाजन कोउ गान तान कोउ नृत्य सवाँरै। साजि साजि बहु भाँति भाँति आरती उतारी। निज निज रुचि सेवा करहीं वैदेही पद कमल रत। सीस नाइ कर जोरि दोउ रामायण अस्तुति करत ॥२॥ घनाक्षरी ॥ कोटिन इन्द्रानी ब्रह्माणी रुद्रानी कोटि सहस कोटि रमा सदा सेवा करि रहीं हैं। कोऊ गान तान लीन्हें कर पान कोऊ कोऊ वर मुकुर छत्र चामर कर गही हैं। कोउ सखी केश कर कमलन्ह सुधारति हैं कोऊ कर जोरि ठाढ़ी बदन जोहि रही हैं ॥ रामायण भूमिजा, के द्वारे

समूह भोर जाको नाम लेत मोद मंगल मय मही है ॥३॥ श्री जनक की दुलारी सुकुमारी प्यारी प्राणहूँ ते कबहुँ बैठि पलँग पीठ सुख सरूप बोध मों। कबहुँ सखी पलना झुलाय रहीं गाय रहीं भाय रहीं सेवा सब करि रहीं विनोद मों ॥ कबहुँ चढ़ीं सिविका चली हैं फूल बाटिका कों आगे पाछे छरी दार सखि समूह मोद मों। रामायण जग मग कबहुँ रतनके सिंहासन पर कबहुँ कबहुँ बैठि रहीं मैया जूकी गोद मों ॥४॥ बाणी विधि गौरी हर रमा रमारमण आदि लोकपाल जेते तेते ठाढ़े कर जोरि कै। चाहत हैं कृपा सदा जनक के दुलारी जू को रिधि सिधि अणिमादिक जहाँ किंकरी करोरि कै॥ भृकुटी के विलास जग होत जात बारबार जयति रामवल्लभा कृपा कटाक्ष हेरि कै। रामायण शरण चरण दीन होइ पुकार करत मेरी मातु तन को रुज मारिये मरोरि कै ॥५॥ हारि हारि वैद गए नेकहू न रोग छए तंत्र मंत्र यंत्रन्ह ते बैठे मुख मोरि कै। निशिदिन रुज से विहाल बीति गयो बहुत काल देखत नहिं शरणपाल हारेउँ कर जोरि कै॥ दीन अति मलीन खीन पापन्ह ते सदा पीन महा मोह-मीन अहो करम धरम तोरि कै। रामायण तजि कहाँ जाय कासे दुख रोइ कहै हौं ता सिय किंकर कहौं सपथ सत करोरि कै ॥६॥ कफ पित्त वाय हाय निजनिज मरजाद त्यागि रुज को बढ़ाय सठ दारुन दुख देइ रहे। अह निशि उरु दाह मेरो पकरि लियो बाँहँ नहिं पावत हौं थाह बल तन को सब लेइ रहे॥ रोकि गई राह मन नेक न उछाह सिय चरण शरण छाँह चाह चाहत हौं सेइ रहे। ये तुच्छ रोग काहे जरि जाहिं छण माहँ जय जनक लली नाहँ भक्ति रामायण भेंइ रहे ॥७॥

सवैया—रोग सतावइ भावइ कैसे कै भूलिगई सिय राम कथा। नेक न धीर धरै निशि वासर हाय करै अति सीश व्यथा॥ बातको घात न जात कही गिरि मंदर जैसे समुद्र मथा। अरजी लिखि

द्वार रामायण गावत भूमि सुते कुरु होइ यथा ॥८॥ काहे न मातु सुनो अरजी गरजी होइ बारहि वार पुकारों । माफ करो जनकी सब चूक दुलार करो शिशु कोप निवारो ॥ रुज सागर में हम बूड़ि मरैं लघु दास रामायण होइ तिहारो । कासे कहौं मिथिलेशलली करुणा करिके अब मोहि उबारो ॥९॥ रुज से तन व्याकुल हौं निशिवासर द्वार परे मिथिलेश लली के । तंत्र न मंत्र यंत्र न भेषज देव न सेव न चेर कलीके ॥ बारहिं वार पुकारत हौं सिय जू सिय जू यह नाम वलीके । रामायण जन भारी भरोसा है नाशहिंगे सब रोग गलीके ॥१०॥ नेक न अम्ब विलम्ब करो जग होत हँसी ई तिहारो कहाइकै । तन रोग से व्याकुल हौं निशिवासर छूटत नाहिं मुये हम धाइकै ॥ तात न मातु न संगी सखा कोउ हीत न बित्त परे मुहँ बाइकै । भूमि सुते रुज नाश करो सुख बास मों जीवै रामायण गाइकै ॥११॥

छप्पै—वात पित्त कफ जनित अरस रुज खल दुख दाई । निज निज औसर पाइ प्रवल अति करहि सजाई ॥ सन्निपात शिरशूल दादु कंडुज तिजराई । सीत उष्ण ज्वर जहर डमरुआ कुष्ट गनाई ॥ गरह जलोदर युग छई व्याधि नहरुआ नहि रहै । रामायण सिय नाम जो प्रेम सहित रसना कहै ॥१२॥

घनाक्षरी—जरि जैहैं सकल जर वैरी जन सुख के यह मरि जैहैं वाई मुँह बाई एक क्षण में । दरि जैहैं दोष दुख दूषण कुचालि कलि गरि जैहैं शीस पीर पिलही पल पल में ॥ भरि जैहैं सकल सुख को उछाह अंग अंग हरि जैहैं चिन्ता छिन्ता हिन्ता छण छण में ॥ रामायण नाम लेत राम जानकी समेत चारो फल शिद्धि सिद्धि घर बा बन बन में ॥१३॥ सीता कहे ते सीत ज्वर को न लेश रहै सीय के कहे ते शीस परी भीर जात है । जानकी कहे ते जानु पानि वात गाँठहू को दंत पीर शमन

होत बैठत यह घात है। जनकलली भूमिजा किशोरी मिथिलेश जूको कहत अंग २ पीर शमन कौन बात है। रामायण राम वल्लभा सप्रेम नाम लेत रहि न सकत छनक रोग टूटत यम दाँत है ॥१४॥ जयजय श्री जानकी दुलारी मिथिलेश जूकी राम प्रिया लाड़िली सुनैना महरानी की। सकल जगत जननी दुख हरनी करुणा स्वभाव चारो श्रुति गाव ठाँव राखति जन कानीकी ॥ तुव तजि अवलम्ब अम्ब दूसरो भरोशो कौन रुज से विहाल टहल छूटी पिकदानी की। रामायण शरण टहल महल केहि प्रकार करै तन में बलहीन दीन वीतत हैरानी की ॥१५॥ भूलि गई बंदगी यहि रोगनके रिन्दगी मों कारी लागी जिन्दगी मों सुनों मातु जानकी। निशिदिन तन पीर कहो कैसे कै धीर धरो थीर नहीं हाय हरो काल के कुबानकी। और न सु ठौर तेरे कौर को जियाये अहौं चाहौं नहिं चारो फल जगत लाभ हानकी ॥ अह निशि तन निरुज चहै रामायण प्रीति लहै मुख से सियराम कहै पावै यह दानकी ॥१६॥ एरे कलिकाल तेरी कुटिल कुचाल चाल ख्याल करु वचन सु सीय रामदास हौं। जाति पाँति व्याह न बरेषो जग चाह चहौं सियाराम सियाराम रसना सुष्ट भास हौं ॥ काम क्रोध लोभ मोह मान न दिखाउ आँखि भागु भागु वावरे तू तेरे नहिं पास हैं। रामायण शरण भरोसे रामवल्लभा के गावौं गुण द्वारे हौं गुलाम नाम खाश हौं ॥१७॥ अरज़ी गुज़रान यहि द्वार बारबार करौं मातु जनक सुते रोग छूटत नहिं काहें। अशरन के शरण चरण तेरो श्रुति चार कहत मेरो बार फेर फार जाऊँ कौन छाँहें ॥ अह-निशि हौं बार बार बूड़त रुज सागर में करो न विलम्ब अम्ब गहो कृपा बाँहें। काल से फँसावो जनि लोग से हँसावो जनि रामायण गान करें संतन की राहें ॥१८॥

सवैया—नेकु न चैन परै निशि बासर कैसे के द्वार परे गुण गावौं। जानकिबल्लभ नाम रटौं किमि पेट खलाइ सबै घर धावौं॥ रुज से तन व्याकुल कर्म सतावत काल कुचाल न काहुहिं भावौं। श्री मिथिलेश लली पद पंकज पूरण प्रेम रामायण पावौं॥१९॥ पाप के ताप जेरों निशि वासर काहे न कान सुनों जनकी। रुज से अति व्याकुल जाउँ कहाँ नहिं ठाँवँ मिलै घर औ बन की॥ हे मेरी मातु प्रिया रघुवीर की मोपर होय कृपा कनकी। रसना सियराम रामायण गावत पावउँ प्रेम सुधा तनकी॥२०॥ अरजी सुनिये मिथिलेशलली रुज से तन व्याकुल काहि पुकारौं। ठाँवँ न गाँवँ सु जाउँ कहाँ पद पंकज मातु अधार तिहारो॥ भावै करौ लघु दास तुम्हारो सरै नहिं सेवक को कछु चारो। छूटि गई टहलो महलो की रामायण कैसे करे सु विचारो॥२१॥ महारुजभीरु न थीरु लहौं तनु पीर दहौं मिथिलेश दुलारी। सोवत हौं अति रोवत कैसे कै जानकि वल्लभ नाम उचारी॥ यहि हाल मों काल बिती अब केतिक मोचु कि देहु कि लेहु उबारी। लोग हँसै मुख कारिख लागत नाम रामायण दासको भारी॥२२॥

घनाक्षरी—सीय कहु सीता कहु जनक की दुलारी कहु राम प्रिया भूमिजा सुनैना लली कहु रे। राघव जू की वल्लभा किशोरी मिथिलेश जू की जानकी विदेह सुता याहीं नाम गहु रे। पवन सुवन स्वामिनी विहारनी सु कनक भवन अहनिशि प्रतिश्वास सदा सकल त्यागि रहु रे॥ रामायण जन्म मरण काल कर्म ताप हरण तजि के श्री सोय चरण नाहक जनि बहु रे॥२३॥ काल को सताया बहु जन्म को नशाया त्रय तापहू को ताया माया द्वार को नचाया है। पाप भरी काया कोउ करै न सहाया है बहुत बेहाया हाय सकल नशाया है॥ नाम ओट लाया क्वचित्

रामायण गाया यह विरद नहीं नाया चाहत करुणाकर छाया है। जयति जनक जाया कुरुदाया न विलम्ब अम्ब बड़ो दुख पाया जन चरण शरण आया है ॥२४॥ नाम बेचि खाया द्वार गये रंक राया धन मदते बौराया ताको शीसहू नवाया है। हालहू सुनाया सर्व ऊपरौ बढ़ाया सठ देखि रिसाया डाँटि बाहर कर वाया है॥ करत हाय हाय नहिं नेकहू बसाया मुहँ कारिख लगाया भूख प्यास अकुलाया है॥ रामायण गाया अब तेरे ही कहाया कुरु जनकलली दाया जन चरण शरण आया है॥२५॥ सुख के उपाय सब द्वार द्वार जाय दियों जनम गमाय हाय देखा टोय टोय कै। तुव विनु माय कोऊ कृत न सहाय हाय चरण दोहाय रोये विष बीज बोय कै॥ भई बहुत सजाय अब नहिं सहि जाय मोहिं लेहु अपनाय हाय जात दिन रोय कै॥ रुज छण में नशाय सुख रामायण गाय सब संत को सोहाय चेरो तेरो सिय होय कै ॥२६॥ हौं तो गुण हीन दीन आलसी अभागी मातु भारी है भरोशा एक मैथिली सुनाम को। ज्ञान ध्यान योग जप राग न बिराग याग जानों नहिं वेद रीति को है मेरे काम को॥ मान दान बासना उपासना न और देव सर्ग नर्क लोक न बड़ाई पर धाम को। रामायण गावौं सुख सदन निरोग तन याही बर पावौं रति नाम सियाराम को॥२७॥ सोई बड़ो भागी यशजागी जगत्यागी सोई जोई अनुरागी रामवल्लभा चरण के। नेक न कुदागी तेहि ठागी कलि कालहू को पागी मति राम रूप श्याम सु बरण के॥ रोग महागहन दहन दव दुर्जन को घोर भव उदधि सु पोत है तरन के। सब सुखदायक सोहायक वदत वेद रामायण लायक महेश हू शरन के॥२८॥ रोग जाय सोग जाय योग औ वियोग जाय भोग जाय स्वर्ग नर्क काल कर्म जरि जाय। हरि जाय ताप पाप घोर यंत्र मंत्रहू को डरि जाय शत्रु सब भूरि भाग भरि जाय॥ बरि जाय काल की करालता बिसरि

जाय मरि जाय बासना दुराश आश तरि जाय। परि जाय शरण चरण मिथिलेश जाके रामायण गान नित सिय पिय जूठ खाय॥२९॥

सवैया—अरजी श्री राघव के दरबार दिया सो लिया सुधि भूलि गई है। दीन को आदर हौं नहिं दीन किधौं कलि काल से ढील भई है॥ बहुकाल बिते रुज से हम व्याकुल जानि परै नहिं काह ठई है। भूमि सुते जन तोर रामायण है यहि द्वार तें बात तई है॥३०॥ हौं अति खोट पै नाम के ओट ते मोट भये जग होति बड़ाई। जलहू न मिलै जहँ याचन ते तहँ पावत भावत दूध मलाई॥ सियराम के नाम सो भूलि परयौं जग अन्ध भयों लखि मान बड़ाई। ताते रामायण प्रीति घट्यो बहु भाँति लट्यों रुज होति सजाई॥३१॥ कैसे कै धीर धरौं मनमें तनमें रुज से मुख लागति लाटी। छण बैठत हौं छण मैठत हौं छण ऐंठत हौं धरि खाट की पाटी॥ केतिक काल वित्यौ यहि हाल मों कासे कहौं दुख को मोर बाटी। हौं मिथिलेश लली शरणे चरणे सब रोग रामायण काटी॥३२॥ मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी जग काह कही सिय को यह चेरो। ठाँव सु गाँव नहीं कहुँ पावत धावत हौं बहु भाँति अनेरो॥ रोग सताव छुटै नहिं नेक परयों कलि कर्मन्हि के भट भेरो। तातें रामायण वारहि वार उठाइ भुजा दोउ नामहि टेरो॥३३॥ घनाक्षरी॥ भारी भव भीर शिर बोझा बहु जन्मन्ह को नेकहू न थीर पीर कैसे जियौं माई जू। धीर न सुटेक एक जानों न विवेक रीति चाह दाह दहत गगन सियों माई जू॥ सुख के उपाय केते जनम गवाये सठ द्वार द्वार जाय हाय विष पियों माई जू। रामायण शरण सुखद शरणद जानि ताप त्रय शमन सु ओट लियों माई जू॥३४॥ रसना सियराम रटै स्वास प्रति कलेश हटै कोटि जन्म पाप कटै अमिय स्वाद पाई। ताको कलि नाँहि जटै खल समूह लाद फटै ताते सठ नाँहि घटै हारि कै पराई॥ करमन्ह के फेर सटै नाम त्यागि व्यर्थ लटै बाँधिबे को

रेणु बटै भव गयन्द भाई। रामायण गान ठटै सन्तन सें प्रीति पटै तन को रुज सकल छटै रामकी दोहाई ॥३५॥ कर्मन्ह की कोल्हुन परि तिल समूह पेरि गये सुर नर मुनि असुर नाग कोऊ नहिं संगी है। धाइ धाइ गाइ गाइ जाइ जाइ द्वार द्वार पेटहू खलाये देखा निज निज सब रंगी है ॥ महादुख जाल केते कालहू बितीत किया मेरीमातु जानकी छुड़ावो काह तंगी है। रामायण खाश है गुलाम राम जानकी को रोग न नशावोगी तो लोग हँसी भंगी है ॥३६॥ सवैया॥ बारक नाम पुकारत आरत होत अभै जग ताप नशाई। ढील भई करुणा मेरी ओर की तोर कहाइ के एती हँसाई ॥ थिर नेक नहीं रुज से तन व्याकुल माफ़ करो जन चूक सजाई। नाशि कुपीर शरीर अभय कुरु ओट रामायण सीय दुहाई ॥३७॥ जानकि वल्लभ नाम रुचै कछु ताते कियों बहु मातु ढिठाई। कायर कूर कपूत अलायक नाम के ओट ते पेट जियाई॥ रुज से तन व्याकुल माफ करो जन चूक परी निज ओर भलाई। हौं मिथिलेश लली पद पंकज प्रेम सु नेम रामायण पाई ॥३८॥ जन्म दरिद्र मिली नहिं सम्पति रोग वियोग अनेक सतायों। काव्यन कोष पुराण पढ्यों निगमागम ज्ञान विराग जनायों॥ पाप से पीन मलीन सदा एक नाम के ओट ते पेट जियायों। हौं मिथिलेश लली चरणे शरणे निःसोच रामायण गायों ॥३९॥ त्यागे नहीं अपनाये बनी लघु हौं एक नामके ओट बड़ाई। स्वान करै अपराध ज्यों लोकमों देखत स्वामिन तासु सजाई॥ हे मेरी मातु प्रिया रघुवीर की हौं दुख दीन दया बिसराई। गावत है जन द्वार रामायण डाटत है कलि आँखि दिखाई ॥४०॥ दीन को आदर कौन करै श्रुति में करुणाकर कासु बड़ाई। पावन को अति पावन पावन काको सदा शिव ध्यान लगाई॥ कौन हरै भव भीर कुपीर तुम्हैं तज़ि कै सियनाथ गोसाँई। हौं केहि द्वार रामायण गावउँ साँची कहो मोहि देहु बताई ॥४१॥

सियराम कबौं प्रिय लागहु गै जल से जस मीन की प्रीति सगाई।
और नहीं कछु चाह चहौं हिय साँची कहौं नहिं मातु छिपाई॥
जानति हौ तुम्ह अन्तर की सब यद्यपि है अति ढीठ ढिठाई।
जानकि वल्लभ नाम रटै निशि वासर प्रीति रामायण पाई॥४२॥
पाले हौ पालत पालहुगे जन को जस बच्छ के धेनु लवाई।
जानकि नाथ अनाथके नाथ सदा करुणाकर बेद बड़ाई॥ हे रघुनाथ
प्रिया जग मातु अहौं लघु दास करौं सेवकाई। द्वार पर गुण
गान रामायण पायन प्रीति निरन्तर छाई॥४३॥

दोहा—जय मिथिला कमला विमल, जय विदेह पुर लोग॥
सियाराम संयोग जहँ, नहि कोउ उपमा याग॥१॥

इति श्री जानकी स्तुति सकल रोग बिकार नाशक समाप्तम्।

नोट—जो कोई इसको नित्य सवेरे ९ रोज पाठ तथा जन्त्र के दर्शन करेगा उसके सर्वप्रकार के रोग नाश हो जायँगे।

॥ जन्त्र ॥

सी	म	ऊ
र	स	रु
भ	ल	ह

॥ श्री भक्ति महारानी जू के ६८ अङ्ग ॥

सद् गुरु शरण[१], सु सँस्कार युत[२], हरि गुरु सँत[३] अभेद लखैं।
सेवत साधु[४] सु साधु धर्म धरि[५] इष्टऽनकूल[६] सु स्वाद चखैं॥
करहिं त्याग प्रतकूल[७] नेम करि, इष्ट धाम[८] में वास रखैं।
धाम अङ्ग परिज्ञान[९] सुभीजे, रासरङ्ग[१०] नहिं आन भखैं॥१॥

जगते प्रेम[११] प्रयोजन भर अरु, दुर्जन[१२] सङ्ग सदा त्यागी।
करहिं[१३] न कबहुँ प्रशिष्य परहिं[१४] नहि कर्म भर्म महँ अनुरागी॥
बहुमत[१५] विद्यावाद[१६] प्रभय लखि तजहिं भजहिं हरि मति जागी।
निज कर तुलसी[१७] सुमन वाटिका निरुपहिं हरि हित बड़ भागी॥ २॥

श्री सिय राम सु जन्म[१८] महोत्सव करहिं यथा व्यय मन लाई।
काम आदि[१९] गत सत्य[२०] प्रभाषी, जानहिं दृढ़[२१] प्रभु प्रभुताई॥
करहि न निन्दा आन[२२] देव की[२३] भूत द्रोहगत सुखदाई।
सुनहिं न निन्दा श्रवण[२४] इष्ट की[२५] सेवहि हरि अघवर काई॥ ३॥
रटहिं नाम अपराध[२६] त्यागि दश, करहिं इष्ट[२७] की परिकर्मा।
त्राहि त्राहि कहि[२८] करहिं दंडवत अष्ट अङ्ग धरि महिपर्मा॥
धनु वाणादि[२९] पञ्च मुद्रा युत, तिलक युगल कंठी गर्मा।
धारण करहि सुदृढ़ भक्तनि के चिन्ह[३०] सुखद सब तजि भर्मा॥ ४॥
श्री सिया राम प्रसाद[३१] सुपावन चरणोदक में रति होई।
संयुत ज्ञान विराग मधुकरी[३२] माँगि खात नहिं दुख कोई॥
निज आचारज ग्रन्थनि[३३] के सब जानत भेद न कछु गोई।
गावत गुण[३४] करि नित्य नेम सों प्रभु मूरति सन्मुख जोई॥ ५॥
प्रभु लीला में प्रेम[३५] लखे कहुँ आवत प्रभु की असवारी।
हर्षित होइ सु उठि[३६] सँग लागे चरण परै कहि बलिहारी॥
अन्तरङ्ग वहिरङ्ग छाँड़ि छल[३७] अष्टयाम सेवा धारी।
मंत्र जाप[३८] युत अर्थ[३९] वन्दना विज्ञापन[४०] विविनय भारी॥ ६॥
श्यामल गोर मूर्ति के कोमल अङ्गन[४१] अर्स परस करना।
रूप माधुरी[४२] लखि दृग मारग आकर्षण[४३] करि उर धरना॥

चन्दन अतर पान दर्पण[४४] वर देइ पुलक मनमुद भरना।
चमर छत्र भूषण पट माला अर्पण करि चरणनि परना ॥ ७ ॥
भोजन सद्य[४५] सुसेज सिंहासन सभा वाटिका विरचाना।
विविध प्रकार विहार सुअस्थल मङ्गलमय प्रभु मन माना ॥
प्रेम सहित[४६] सिय रामलाल कहँ वहु विधि लाड सुलडवाना।
कृपा कोर को रहे[४७] निहारत मन वच कर्म न गति आना ॥ ८ ॥
मधु धारा सम[४८] टेक सुमति गति प्रभु पद पङ्कज अरुझानी।
भीतर बाहर लखैं इष्टमय[४९] रँगे राम रँग मुद दानी ॥
श्री सिय राम चरित्र[५०] सुनहिं नित कहहिं परस्पर[५१] गुण खानी।
सार सुग्राही[५२] सम[५३] संतोषी[५४] बोलहिं सदा सुप्रिय[५५] बानी ॥ ९ ॥
दास[५६] सख्य[५७] वात्सल्य[५८] सु आदिक प्रभु सन नाते जोरे हैं।
अर्पहिं अतिप्रिय[५९] वस्तु इष्ट हित कमउ[६०] करत न थोरे हैं ॥
प्रीतम की राजी[६१] में राजी रहत सदा बनि भोरे हैं।
सदा चार[६२] प्रिय नीति प्रीति शुचि जगते[६३] नाते तोरे हैं ॥ १० ॥
श्री सिय राम अनन्य[६४] उपासक राखत दृढ़ विश्वासा है।
मुदित रहहिं वशु[६५] याम नाम रत त्याग जक्त की आशा है ॥
विचरहिं[६६] अवनि असङ्ग अगेही कालहु[६७] केर न त्राशा है।
श्री प्रेमलता प्रिय सवहिं[६८] पूज्य सोइसन्त सत्य हरि दासा है ॥ ११ ॥

दो०—भक्ति अङ्ग जाने विना, बिनु सतगुरु उपदेश।
भजनौ करत न होत सुख मिटत न कठिन कलेश ॥
अडसठ अङ्ग सुभक्ति के, समझहु बैठि इकन्त।
श्री प्रेमलता गुरुदेव सन, पैहौ मोद अनन्त ॥

॥ जय सियाराम ॥

श्री ग्रन्थौवाच

॥ चौपाई ॥

भूमि धरै बिनु आसन कोई, टोरि मरोरि बिगारै जोई।
पढ़त न सुनत धरत गठियाई, पलटहिं पन्ना थूक लगाई॥
आदि अन्त लगि पढ़ि न बिचारत, जहँ तहँ लखि अनरथ उर धारत।
जो नहिं करत अदब सठ मोरा, पावहि ते दुःख नरकनि घोरा।
गुरु बिनु मन मुख जन मम रूपा, लखहि न परे भर्म तम कूपा॥
पढ़त मोंहि समुझत नहिं भेदा, तेहि लगि तिन्हि कर नशत न खेदा॥

॥ सिय महिमा ॥

छन्द-सिय महिमा सु कछुक रघुनन्दन जानत कहि न सकत सोऊ।
अकि जानत शुचि सन्त रसिक गुरु कृपा द्रवहिं कै जब दोऊ॥
रटै नाम सिय राम नेम करि अकि गुरुमुख होइ जो कोऊ।
सवा लाख नित वर्ष उभय षट प्रेमलता जानै ओऊ॥१॥
परम दयालु प्रणत सुख दायक सिय स्वामिन गुण खानि हैं।
उद्भव पालन नाश जासु डर होत श्रुतिन की बानी हैं॥
अगुण सगुण ईशन की प्रेरक घट घट माँहि समानी हैं।
प्रेमलता यह बात प्रगट पै जानत नहि अज्ञानी हैं॥२॥

॥ श्रीवचनम् ॥

तुम्ह बिनु द्रवौं न कबहुँ जनन पर प्यारी यह दृढ़ प्रण मेरो।
कृपा पात्र जो तोर रहूँ मैं तिन्ह के संग सु बनि चेरो॥
तब प्रसन्नता हेतु करौं बहु चरित चहौं नित हित हेरो।
प्रेमलता तोहि सम न मोंहि प्रिय प्राणहुँ सुख त्रिभुवन केरो॥

जय सियाराम जय जय सियाराम

श्री 'प्रेमलता' जू कृत, श्री सतगुरू कृपा प्रकाश अन्तरगत प्रकाशित ग्रन्थः—

(१) श्री वृहदोपासना रहस्य
(२) श्री प्रेमलता पदावली
(३) श्री सीताराम रहस्य दर्पण
(४) श्री नाम रहस्य त्रयी
(५) श्री नामतत्त्वसिद्धांत दोहावली
(६) श्री जानकी स्तुति
(७) षट्ऋतु विमल विहार
(८) श्री सीताराम नाम रूप वर्णन
(९) श्री सीताराम नाम जापक महत्व
(१०) श्री ज्ञान पचासा
(११) श्री मिथिला विभूति प्रकाशिका
(१२) श्री वैराग्य प्रबोधक बहत्तरी
(१३) श्री हितोपदेश शतक
(१४) श्री प्रेमलता बाराखरी
(१५) श्री सीताराम नाम सम्बन्ध बहत्तरी
(१६) श्री नाम वैभव प्रकाश चालीसा
(१७) श्री जानकी विनय नामादि महत्त्व
(१८) श्री नाम दृष्टान्तावली
(१९) श्री सतगुरु शब्द यथार्थ ज्ञान तथा प्रबोधिका, सीय प्रसादी महात्म्य)
(२०) श्री अनन्य शतक
(२१) निजात्म बोध दर्पण
(२२) अपेल सिद्धान्त
(२३) षोडष भक्ति
(२४) सन्त महिमा
(२५) उपदेश पेटिका
(२६) पंच संस्कार
(२७) अष्टयाम
(२८) श्री जानकी जी की बधाई
(२९) श्री सार सिद्धान्त प्रकाश कुण्डलियाँ
(३०) नित्य प्रार्थना
(३१) विश्वविलास बीसिका
(३२) श्री जानकी स्तुति

श्री सुहागलता कृत प्रकाशित ग्रन्थ :—

(१) कल्याण की साधना (२) वैष्णव धर्म प्रश्नोत्तरी
(३) श्री हनुमत प्रार्थना व सद्गुरू भगवान का संक्षिप्त जीवन चरित्र
(४) चतुष्ट गुटका (५) श्री प्रमलता शतक (६) श्री सीता तत्व प्रकाश

मिलने का पता—सद्गुरू निवास, सीतामढ़ी
मुज्जफ्फरपुर (बिहार)

जय सियाराम जय जय सियाराम